इतिहासलेखन की दृष्टिसे हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन

प्रा.डॉ.व्यास सी.पी.
के.के.एम.कॉलेज,
मानवत जि.परभणी महाराष्ट्र

Key – हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन– निजाम– इतिहासलेखन– पुर्नलेखन

Abstract– भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से भारत भले ही 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के गुलामी से स्वतंत्र हुआ। पर भारत में एक ऐसा भी हिस्सा रहा जो की 15 अगस्त 1947 से 17 सितंबर 1948 तक ज्यादा की गुलामी, जुल्म, अत्याचार सहता रहा । ऐसा हिस्सा जिसे हैद्राबाद स्टेट या निजाम स्टेट के नाम से जाना जाता है। इस निजाम की गुलामी, जुल्म, अत्याचार, हिंसा आदी से बाहर निकलने का प्रयास मराठवाडा (महाराष्ट्र) के लोगों ने किया। जिसमें महिलायें–पुरूष–बालक, किसान, मजदूर आदी घटकोंने विरोध किया। इस से निजाम स्टेट 17 सितंबर 1948 को स्वतंत्र हो पाया और आज के भारत में सम्मिलित हुआ। इस घटनाक्रम का इतिहास जो लिखा गया है और इसके आगे लिखा जायेगा इसे इतिहासलेखन की दृष्टि से लिखा जाना आवश्यक है। इसमें जिन–जिन व्यक्तीयों, संस्थाओं, स्त्री–परूषों, स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतीकारक, किसान, मजदूर आदीयों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान इस कार्य में दिया उनके नामों का उल्लेख आना आवश्यक है।

प्रस्तावना

इतिहासलेखन बहुत ही जटील प्रक्रिया होने से इतिहासलेखन जागरूकता से होना आवश्यक होता है। इस लेखन प्रक्रिया में विशिष्ट जाति, धर्म, प्रदेश, व्यक्ति आदि के प्रति लगाव रहते हुए किया गया लेखन होने से सच्चे इतिहास का निर्माण नहीं हो सकता । सत्यनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ दृष्टिसे घटित घटनाओं को परखकर, घटनाक्रम तथा उसके लिये जिम्मेदार व्यक्ति, नेता या सामान्य जनों, घटनाओं के घटित होने के कारणों या परिस्थितीयों तथा विविधांगी साक्षियों से जुटाये तथ्यों से किया हुआ गतकाल का लेखाजोखा सही मानों से इतिहास होता है। इतिहास के इस दायरे में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और राजनितिक सभी अंगों का विचार होना जरूरी है। घटित हो चूकी घटनाओं को इस ढंग से परखकर लिखा जाना अपेक्षित होता है। कभी किसी विशिष्ट वर्तमान विचारधारा के चश्मे से देखकर किया हुआ लेखन भी एकांगी हो जाता है। गतकालीन सत्य का प्रकटन वह भी साक्षियों के साथ जरूरी होता है। मानव मन में जो विचार आये, उसे सामुहिक स्वरूप कैसे मिला, उसने विस्फोटक स्वरूप कब और कैसे लिया इसकी सही सोच और खोज इतिहासकार के स्वअध्ययन, चिंतन, पृथक्करण तथा विश्लेषण और अन्वयार्थ से सिध्द होते हैं। कई बार देरीसे लम्बे अर्सेबाद सामने आयी साक्षियों से पूर्वलेखन की कमियों को भरकर पुनर्लेखन होना जरूरी होता है। इसीलिये इतिहासलेखन की प्रक्रिया निरंतर चलनेवाले गतकाल के मानव की अनाकलनीयता को स्पष्ट रूप देती रहती है।

''आर्य समाज ने यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती तो तीन दिन में हैद्राबाद में पुलिस एक्शन सफल नही हो सकता था।''–सरदार पटेल, साथ ही संग्राम की सफलता में विविध संस्थाओं, नेताओं तथा संघठनों का योगदान मिलने से हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन सफलता में परिणत हुआ।

उपरोक्त विचारों की प्रस्तुति इसलिये की गयी की हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन का इतिहास भी अलग–अलग तुकडों में बिखरा पडा है। उसका आज तक हुआ लेखन विशिष्ट विचाराधाराओं से हुआ है। इसी कारण आर्य समाज, स्टेट कॉग्रेस, हिंदु महासभा, किसान दल, कम्युनिष्ट जैसी विचारधाराओं को मद्देनजर रखकर हुआ लेखन जन सामान्यों के सहभाग को ध्यान में रखकर पुनः अनुसंधान और शोध की दृष्टिसे एकीभूत किया जाना चाहिए। सैकडों ग्रंथों, पत्रिकाओं तथा विविध भाषी शोधग्रंथों से, सरकारी सुरक्षित दप्तरों से और जीवित हजारों सत्यग्रहियों से मिलकर सिध्द किया जाना अपेक्षित है। केवल विशिष्ठ नेताओं के नामपर ही उसे न लिखकर सामान्य से सामान्य स्त्री–पुरूष–बालक भलेही वे ग्राम या शहर के हो, खेतीहर किसान, मजदूर हो, गृहस्थीवाले या व्यवसायकर्मी हो उन सबने मिलकर इतिहास को साकार

किया है। उन सबका योगदान भी कुछ प्राप्त न करने की अपेक्षारहित भावना से रहा, क्या उनके स्वाहाकार को भूलाकर इतिहास लिखा जा सकेगा? क्या उन्हें भूलाकर केवल अहिंसा से ही सबकुछ घटित हो गया? जिन माता–बहनों ने बलात्कार सहे, रजाकारों के भय से कुओं में कुदकर अपने प्राण त्यागे, बंदुकों की गोलियॉ सही, प्रेरणा कार्य किया, छिपकर संग्राम में जुटे लोगों को रोटियॉ खिलाई, प्रसंग आनेपर हाथ में रायफिल भी उठाई– उनके अनुल्लेख से लिखा क्या इतिहास सच्चा इतिहास होगा? नही, इसलिए हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन का इतिहास की दृष्टि से किया जानेवाला लेखन इतिहासलेखन की धरातलपर रखकर किया जाना आवश्यक है। जिसमें सामान्य जन समुदाय, स्त्री–पुरूष–बालक, किसान, मजदूर आदी सभी वंचितों का रहा सहभाग युक्त लेखन किया जाना आवश्यक जान पडता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दृष्टिसे इतिहासलेखन–

हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन का इतिहास भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के परिपेक्ष्य में लिखा जाना चाहिए। फिर भी इसका स्वरूप अन्य संस्थानों के स्वतंत्र भारत में विलिन कराने की, या होने की प्रक्रिया से पूर्णतः भिन्न है। अतः इतिहासलेखन की प्रक्रिया में हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन से जुडे प्रजाजनों के संघर्षों को विशेष रूप से ध्यान में रखना जरूरी है। यहॉ के निजाम का स्वतंत्र रहने का प्रयास, कासीम रझवी का तिनों समुद्रों से दिल्ली तक आसफजाही झंडा फेहराने की घोषणा को निजाम मीर उस्मान अली की मौन स्विकृति, यहॉ की 85 प्रतिशत प्रजा का हिंदू होना लेकिन सत्ता में चुनिंदा मुस्लिमों का प्रभाव, प्रजा में खौंफ पैदा करनेवाली इत्तेहादुल मुसलमीन और राजाश्रय द्वारा संचालित गैर सरकारी संघठनों द्वारा प्रजापर हो रहे अनन्वित अत्याचार, लुटमार, बलात्कार, धर्मद्रोह तथा धर्माधवृत्ति से त्रस्त होना, स्त्रियों के जीवन में असुरक्षितता, पंचभाषिक संस्थान, वर्तमान महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश की भूमिपर अस्तित्व, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक, सामाजिक कानूनों के कारण निर्मित बंधनों और विद्वेश का जन्म आदी सभी का विचार करके इस मुक्तिसंग्राम का जन आंदोलन बनना, आर्य समाज, हिंदू महासभा, कॉग्रेस, कम्युनिस्ट तथा किसान दल का जन्म जनसहभागिता आदि की दुष्टि से इसे समझा जाये तो– हुए अनन्वित अत्याचार, मोर्चे, सत्याग्रह, जन विरोध और अंततः सशस्त्र संघर्ष का इतिहासलेखन सर्वांगीण रूप में किया जाए तो यह व्यापक जन आंदोलन विश्व का महानतम संघर्ष सिध्द होगा।

हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन के समग्र इतिहासलेखन के हेतु–

निजाम के राज्य की नींव सन 1724, इस में सात निजामों का कार्यकाल, सुधार का कार्य तथा उसम सुधार कार्य में प्रजाहित की कमी, 20 वीं सदी में हुए अन्यायी कानून, दहशत बढाती भूमिका मराठवाडा, कर्नाटक, आंध्र क्षेत्र में बढता विरोध, उभरते नेतृत्व के धनी अनेक गणमान्य, जनता की मांगों के लिए सत्याग्रह, जेलभरो, आंदोलन और धीरे–धीरे भूमिगत रूप में जन्म लेता सशस्त्र स्वरूप क्रमशः सिध्द करने हेतु हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन का इतिहास पुनर्लेखित होना और उसकी प्रस्तुति होना अपेक्षित है। लेखनकार्य हेतु दिल्ली, हैद्राबाद, कर्नाटक, महाराष्ट्र में स्टेट अर्काइव्हज, शासन द्वारा प्रकाशित सामग्री, आर्य समाज के इतिहास के खंड स्टेट कॉग्रेस के नेता स्वामीजी तथा बाद में स्थापित उनके नाम की संस्था के प्रकाशन हिंदू महासभा के कार्य स्पष्टता करनेवाले ग्रंथ इन जैसे लिखित सेंकडों ग्रंथों तथा अभी भी जीवित स्वतंत्रता संग्राम की यादें संजोये हुए वीरों के साक्षात्कार द्वारा संकलित जानकारी से सत्य को उजागर किया जा सकता है। हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन से संबंधीत सारा लेखन निम्न मुदों को ध्यान में रखकर किया जाना उचित होगा– 1.शासन की बढती नृशंसता, 2.मुक्ति संग्राम पूर्व के सत्ताविरोधी भिल्ल, कोळी, आदिवासी तथा क्षेत्रिय विरोधी आंदोलन और उनका शमन, 3.इस्लामी संघटनों द्वारा बढते अत्याचार, 4.आर्य समाज द्वारा जनजागृति हेतु स्व.पं.रामचंद्रजी देहलवी, शहीद श्यामलालजी आर्य, भाई बंसीलालली आर्य, स्व.म.नारायण स्वामी, स्व.पं.स्वतंत्रतानंदजी, घनश्यामजी गुप्त, स्व.पं.विनायकराव विद्यालंकार, स्व.शेषरावजी वाघमारे, स्व.वीरभद्रजी आर्य, स्व.चंद्रशेखरजी वाजपेयी जैसे नेताओं द्वारा धर्म रक्षा के प्रयास, 5.मुक्ति आंदोलन का उभरता स्वरूप–हिंदू प्रजा मुस्लिम सत्ता (इस्लाम) या अन्यायी शासन का विरोध तथा सामाजिक संगठन, 6.हैद्राबाद हिंदुसभा हितचिंतक पॉच परिषदों के प्रभाव, 7.संपूर्ण देश में जनजागरण, देशभक्ति की स्थिति के प्रभाव उदा.आंदोलनकारी, लोकमान्य तिलक द्वारा प्रेरित सार्वजनिक गणेश उत्सव, शिव जयंती उत्सव, सुभाषबाबू की प्रेरणा, म.गांधी द्वारा प्रेरणा, 8.हिंदुमहासभा का कार्य– स्व.सावरकर और वि.घ.देशपांडे

आदी नेताओं का योगदान, 9.विविध शैक्षिक संघठनों का योगदान, 10.सामाजिक तथा सांस्कृतिक संगठनों का गठन और योगदान, 11.किसान दल के माध्यम से यशवंतरावजी सायगावकर तथा साथियों का योगदान, कम्युनिस्ट विचारधारा के नेताओं का योगदान, स्टेट कॉग्रेस के माध्यम से स्वामी रामानंद तीर्थ, गोविंदभाई श्रॉफ, बाबासाहब परांजपे तथा अनेकों सहकर्मियों के योगदान से बढता जन सहभाग, 12.वंदे मातरम आंदोलन, 13.डॉ.बाबासाहब आंबेडकर और शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन का कार्य, 14.राष्ट्रीय स्तर के विविध संघठनों की मदद, 15.पडोसी राज्यों, ब्रिटिश क्षेत्र की जनता द्वारा सहयोग, 16.सत्य, अहिंसा, असहयोग, जंगल सत्याग्रह, जेल भरो के रूप में बढता और सर्व क्षेत्रिय जनसहभाग जिसमें स्त्री, पुरूष, आदिवासी, किसान, मजदूर, बालक, विद्यार्थी, न्यायाधिश, वकिल, शिक्षक आदी के योगदान से राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक दृष्टिसे हुए इस संग्राम के परिणामों का परिक्षण और महत्त्व उजागर होना चाहिए।

यहॉ मुस्लिमों से संघर्ष करनेवाले वीरों और विरांगनाओं ने अत्याचार भी सहे और प्रत्युत्तर में संघर्ष भी किया। इस इतिहास में सभी स्तर के स्त्री–पुरूष–बालकों ने जी जानसे और स्वप्रेरणा से संघर्ष भी किया। अतः इस संस्थान के तथा बाहर के प्रेरणादायी नेताओं का महत्त्व तो है ही पर जिन्होंने सशस्त्र कैंप में मौत को गले लगाया, उन सभी नागरिकों का महत्त्व सेनानियों के समतुल्य है। अनेक अखबार–उर्दू, मराठी, हिंदी, तेलगू, कन्नड, अंग्रेजी भाषा में शुरू हुये जिन्होंने जागृति की। प्रजा अधिक मात्रा में हिंदु होने से अन्याय भी उन्हींपर हुआ, सैंकडों गॉव जलाये गये, लुटे गये, रझाकारों द्वारा किये ऐसे कृत्य क्षम्य होंगे? इतिहास इसे कदापि क्षमा नही करेगा। विविध भाषाओं में पूर्व रचित गीत तथा हुतात्माओं के लिए ग्राम्य महिलाओं ने रचे गीत, घोषणाएँ और प्रेरक वाक्यों का संगलन भी आवश्यक है। अहिंसा, सत्य से न झुकनेवाले शासन के खिलाफ भय निर्माण, उन्हीं के शस्त्रों की लुट, करोडगिरी नाकों की लूट करनेवाले और हतियार, बम आदी का प्रयोग करनेवाले जांबाज देशभक्तों में से कइयों को बलिदान देना पडा।

शिक्षितों ने अपने ढंग से, स्त्रियों ने अपने ढंग से, बालकों ने अपनी क्षमता नुसार संघर्ष में अपनी आहुतियॉ दी। स्त्रियों की सहभागिता तो सच में नारी शक्ति के हमारे इतिहास का गौरव ही है। दलितों ने दिया योगदान भी कम महत्त्व का नही है। इस मिट्टी की शान हेतु विविध क्षेत्रों मे कार्यरत संघठनों, सैंकडों प्रमुख शुर सहाय्यक नेताओं तथा स्त्रियों का नेतृत्त्व करती सभी माताओं के साथ हजारों की तादाद में सामिल हुए, स्वतंत्रता संग्राम में सहभागिता देनेवालों का योगदान तथा उनका स्थान उन्हें दिया जाना चाहिए। उदा– एक सैनिक का घर लुटा गया, उसके घर की स्त्रियों का अपहरण हुआ, तो उसने गर्मजोशी में सैंकडों रझाकारों को मौत के घाट उतारा। बैंक लुटने में भी वह अग्रही रहा। शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण देकर, मराठवाडा–कर्नाटक सीमा में लोगों की रक्षा की, जो व्यायाम से शक्ति का पूंज और गठित शरीर था। उसने जेल भोगी, जेल में मन परिवर्तन हुआ। अपने मृत नेता व्यंकट मुळे की समाधि बनाकर, पोवाडा बनाया, देशभक्ति पर, म.गांधी, नेताजी सुभाष आदीपर पोवाडा जैसे साहित्य की रचना की। समाज ने उस भीमराव को कैद से सद्व्यवहार से जल्द छोडे जानेपर, पुनः पकडवाया और वह पुनः हत्यारा बना फिर भी ऐसे व्यक्तियों ने स्वतंत्रता हेतु किया कार्य भी देश सेवा की दृष्टिसे नकारा नहीं जा सकता। इस मुक्ति संग्राम में जिन्होंने अमुल्य सहयोग दिया ऐसे लोगों का सम्मान करते हुए भारतीय सरकार ने उन्हें प्रमाण पत्र और पेन्शन की रकम मंजूर करके गौरवान्वित किया। दुःखद बात यह है कि सच्चे संघर्षकर्ताओं के कई नाम सरकारी यादी में नहीं जुडे बल्कि जिन्होंने विरता कार्य और सहभाग नहीं दिया वे भी उपरोक्त सम्मान प्राप्त हो गये। इसकी छानबीन संबंधित क्षेत्रों के जेल कार्यालयों तथा सरकारी दप्तर की साक्षियों से प्राप्त कर संबंधित परिवर्तन अपेक्षित है। स्वतंत्र भारत की ओर से लोहपुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा 13 से 17 सितंबर 1948 तक पुलिस ऐक्शन द्वारा हैद्राबाद संस्थान को स्वतंत्र भारत का हिस्सा बनाया। इन हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन में सहभागी सभी विरों को और शहीदों को विनम्र अभिवादन!

संदर्भ

1. नरेंद्र पंडित, 1973, हैद्राबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष, गोविंदराम हसानंद, दिल्ली
2. पोतदार वसंत, 1984, हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्राम
3. चंद्रकांत गर्जे डॉ, 1909, वीर सेनानी आर्य नेता श्री शेषराव वाघमारे, आर्य समाज, निलंगा
4. रोडे सोमनाथ डॉ, 2008, हैद्राबाद मुक्ति लढा आणि स्वामी रामानंद तीर्थ, अश्विनी प्रकाशन, लातूर

5. परळीकर अशोक, 1988, हैद्राबादचा पहिला सत्याग्रह
6. कुरूंदकर नरहर प्राचार्य, 1998, हैद्राबादः विमोचन आणि विसर्जन, रजत प्रकाशन, औरंगाबाद
7. कुंटे भ.ग.डॉ., स्वातंत्र्य सैनिक चरित्र कोश महाराष्ट्र राज्य मराठवाडा विभाग
8. सत्याग्रह स्मारिका, 1989, आर्य प्रतिनिधी सभा, हैद्राबाद, आंध्रप्रदेश
9. व्यास पी.जी.प्रा., 1998, इतिहासलेखनशास्त्र, अभिजीत पब्लिकेशन्स, लातूर
10. देव प्रभाकर डॉ., 1999, हैद्राबाद मुक्ति संग्राम स्वातंत्र्य सैनिकांच्या मौखिक नोंदी, स्वामी रामानंत तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड
11. भालेराव अनंत, 1987, हैदराबादचा स्वातंत्र्य संग्राम आणि मराठवाडा, मौज प्रकाशन, मुंबई
12. ब्रह्मनाथकर वि.गो., 2000, हिंदू अस्मितेचा हुंकार, भारतीय इतिहास संकलन समिती, महाराष्ट्र
13. वाजपेयी चंद्रशेखर, 1995, हैद्राबाद मुक्ति संग्राम आणि मी, श्री कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद
14. Tirth Swami Ramanand, 1967, Memories of Hyderabad Freedom Struggle
15. Dhenjle B.S., 1988, Contribution of Marathwada to Hyderabad Freedom Movement,1938 to 1948